रात्री क्लास ओमशांति 20.12.67

मुरली कब मिस नहीं करनी चाहिए। बड़ा शौक होना चाहिए। सवेरे का (के) टाइम तो फुरसत रहती ही है। अब तुम बच्चों को ईश्वरीय मत मिलती है। वह.....न आकर लेंगे तो पद क्या पावेंगे?बहुत फर्क है। मनुष्य मत से नर्कवासी ,ईश्वरीय मत से स्वर्गवासी बनते हैं। दैवी मत वाले तो देवता ही हैं। फिर बाद में रावण कत(मत) होती है। मनुष्य मत अथवा मानव मत कहो जिससे मनुष्य नर्कवासी बनते हैं ईश्वरीय मत से देवता बनते हैं। फिर जब देवताओं का राज्य पूरा होता है तो मनुष्य होते हैं। मनुष्य मत से फिर नीचे उतरते हैं। जिस मत से इतना उंच मर्तबा मिलता है उस मत पर बच्चे ध्यान नहीं देते हैं। मुरली जो मिस की है वह सुनना चाहिए। ईश्वर का परिवार बिल्कुल सिम्पल है। बाप,बच्चे और बच्चियां। बाकी जो भी सम्बंध हैं उनको तोड़ना पड़ता है। शादी करने से और ही सम्बंध बढ़ता है। फिर ससुर घर भी याद आने लगे। .....आदि सब याद आवेंगे। यहां तो सबको भूलाना है। सिर्फ ईश्वरी सम्बंध। और सब देह सहित देह के सर्व सम्बंध भुलाने हैं। बाबा तो(को) सम्बंध आदि की याद भी नहीं है। देह सहित देह के सर्व सम्बंध तोड़ने हैं। रावणराज्य में सम्बंध का बहुत परिवार होता है। अभी उन बहुत सम्बंधों को तोड़ना है। देह भी पुरानी है। एक संग जोड़ना है तब उंच पद पा सकते हैं। सम्बंध होगा तो अंत वही याद आ जावेगा। बाबा पूछते हैं नारायणी नशा चढ़ा हुआ है तब उंच पद पा सकते हैं। मौत तो सदैव सिर पर है ही है। दिन प्रतिदिन सम्बंध तोड़ना है। ज्ञान में चलने वाले बड़े खबरदार रहते हैं। देह सहित सन्यास सन्यासी कर न सके। उन्हों के लिए कायदा नहीं। उनको इस प्रकार का ज्ञान मिलता नहीं है। सिवाय तुम ब्राह्मणों के कोई में ईश्वरी ज्ञान है नहीं। कितने बड़े2 गवर्नर, प्रेजिडेंट आदि हैं। अपन को नारायण भगवान भी कहलाते हैं। बाप कहते हैं जो अपन को भगवान कहलाते हैं वह हिरण्यकश्यप हैं। तुम बच्चे मास्टर मैसेंजर वा पैगम्बर बने हो। मैसेज देना तुम्हारा काम है। जो अपने कुल का होगा उनको झट (जंच) जावेगा। बाप के पास जाना है तो बेहद के बाप को याद करो तो पावन दुनियां का मालिक बन जावेंगे। पूछना चाहिए क्या चाहते हो मुक्ति वा जीवनमुक्ति?मोक्ष होता नहीं। अब तुमको क्या चाहिए?यह तो .....पूछते हैं। सन्यासियों से पूछना ही व्यर्थ है। भारत में भगवान भी बहुत हो गए हैं। यह तो बच्चे समझते हैं टाइम बहुत पड़ा है। बच्चे समझते हैं 8–9 वर्ष हैं। बहुतों को संदेश देना है। उंच ते उंच बाप का परिचय देना है। नीच ते नीच हिरण्यकश्यप आदि तब तो लिखा है। थम्ब से निकल भगवान ने मारा। बाप कैसे हिंसा करेंगे?यह सब हैं गपोड़े। ब्लाइंडफेथ कितना है। भारत में भगवान हो गए ढेर के ढेर। भक्तिमार्ग की तो कमाल है। उनके फालोवर्स तो करोड़ों हैं। दिन–प्रतिदिन सा. बहुतों को होते रहेंगे। इनकी भी अवस्था बढ़ी जावेगी। कर्मातीत अवस्था को पाता जावेगा। फिर ब्रह्मा का भी बहुतों को सा. होता रहेगा। योगबल बढ़ता जावेगा ना। बहुत गुह्य राज हैं ज्ञान के। ब्रह्मा का नाम कम थोड़े ही है। त्रिमूर्ति ब्रह्मा कह देते हैं। मनुष्य शंकर को उंच रखते हैं शिव–शंकर को मिला देते हैं। हैं त्रिमूर्ति ब्रह्मा। ब्रह्मा का ही पार्ट है जास्ती। ब्रह्मा का कहो या विष्णु का कहो सबसे जास्ती पार्ट इन दोनों का है। बच्चों को रोज समझाया जाता है स्कूल में रोज न पढ़ेंगे ,मुरली न सुनेंगे तो फिर अबसेंट पड़ जायेगी। पढ़ाई की लिफ्ट तो जरूर चाहिए ना। गॉडली यूनिवर्सिटी में अबसेंट थोड़े ही होना चाहिए। पढ़ाई कितनी उंच है, जिससे तुम सुखधाम के मालिक बनते हो। वहां तो अनाज आदि सब फ्री रहता है। पैसा नहीं लगता। अभी तो कितना महंगा है। सौ वर्ष में कितना महंगा हो गया है। नहीं तो आगे कितनी सस्ताई होगी। वहां कोई अप्राप्त वस्तु नहीं होती है जिसके लिए पुरुषार्थ करना पड़े। वह है ही सुखधाम। तुम अभी वहां के लिए तैयारी कर रहे हो। तुम बेगर टू प्रिंस बनते हो। साहुकार लोग कोई अपन को बेगर नहीं समझते हैं। अच्छा,ओम।